२. इतिहास के साधन

२.१ भौतिक साधन
२.२ लिखित साधन
२.३ मौखिक साधन
२.४ प्राचीन भारत के इतिहास के साधन
२.५ इतिहास का लेखन करते समय बरती जानेवाली सावधानी

करके देखो ।

- अपने परिवार के दादा जी–दादी जी के समय की वस्तुओं की सूची बनाओ ।
- अपने परिसर/गाँव की पुरानी वास्तुओं की जानकारी इकट्‌ठी करो ।

हमारे पूर्वजों द्‌वारा उपयोग में लाई गईं कई वस्तुएँ आज भी उपलब्ध हैं । उनके द्‌वारा उकेरे गए विभिन्न लेख हमें मिले हैं । इन साधनों की सहायता से हमें इतिहास का ज्ञान होता है । इसके अतिरिक्त रीति-रिवाजों, परंपराओं, लोककलाओं, लोकसाहित्य, ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर हमें इतिहास की जानकारी मिलती है । इन सभी को 'इतिहास के साधन' कहते हैं ।

इतिहास के साधनों के तीन प्रकार हैं; भौतिक साधन, लिखित साधन, मौखिक साधन ।

बताओ तो !

- किले/गढ़, गुफाएँ, स्तूप जैसी वास्तुओं को 'भौतिक साधन' कहते हैं । इनके अतिरिक्त अन्य किन-किन वास्तुओं को भौतिक साधन कहते हैं ?

२.१ भौतिक साधन

दैनिक जीवन में मनुष्य विभिन्न वस्तुओं का उपयोग करता है । पूर्वकालीन मनुष्य द्‌वारा उपयोग में लाई गईं अनेक वस्तुएँ आज हमें महत्वपूर्ण जानकारी दे सकती हैं । प्राचीन वस्तुओं में खपड़े के टुकड़ों के आकार, रंग और नक्काशी के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे बरतन किस कालखंड के होंगे । गहनों-आभूषणों तथा अन्य वस्तुओं के आधार पर मानवीय समाज के पारंपारिक संबंधों की जानकारी प्राप्त होती है। अनाज, फलों के बीज, प्राणियों की हड्डियों के आधार पर आहार की जानकारी मिलती है । विभिन्न कालखंडों में मनुष्य द्‌वारा बनाए गए मकानों और इमारतों के खंडहर पाए जाते हैं । इसके अतिरिक्त सिक्के और मुद्राएँ भी पाई जाती हैं । इन सभी की सहायता से मानवीय व्यवहार की जानकारी प्राप्त होती है । इन सभी वस्तुओं और वास्तुओं अथवा उनके अवशेषों को इतिहास के 'भौतिक साधन' कहते हैं ।

क्या तुम जानते हो ?

अनाज के दाने बहुत समय तक टिके नहीं रहते । उनमें कीड़े लगते हैं । उनका बुरादा हो जाता है ।

प्राचीन समय में अनाज को पीसकर आटा बनाने से पहले अनाज को भूनते थे और बाद में उसे मोटा, दरदरा पीसते थे । अनाज को भूनते समय यदि उसके कुछ दाने अधिक भुने जाते अथवा जल जाते तो वे फेंक दिए जाते । ऐसे जले हुए दाने कई वर्षों तक टिके रहते हैं । ऐसे दाने उत्खनन में पाए जाते हैं । प्रयोगशाला में उनका परीक्षण किए जाने पर वे दाने किस अनाज के हैं, यह पहचाना जा सकता है ।

सिक्के

खपड़ा

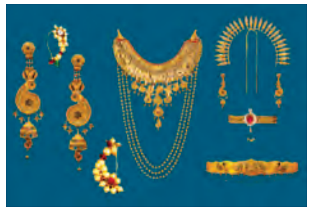

गहने–आभूषण

बरतन

क्या तुम जानते हो ?

मंदिरों की दीवारें, गुफाओं की दीवारें, शिलाएँ, ताम्रपट, बरतन, कच्ची ईंटें, ताड़पत्र, भोजपत्र आदि पर उकेरे गए लेखों का समावेश लिखित साधनों में होता है ।

ताम्रपट

शिलालेख

२.२ लिखित साधन

अश्मयुग के मनुष्य ने अपने जीवन के अनेक प्रसंगों और भावनाओं को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । हजारों वर्ष बीतने पर मनुष्य लिखने की कला से अवगत हुआ ।

प्रारंभ में मनुष्य लिखकर रखने के लिए प्रतीकों और चिह्नों का उपयोग करता था । इन प्रतीकों और चिह्नों से लिपि बनने में हजारों वर्ष लग गए ।

प्रारंभिक समय में लिखने के लिए खपड़े, कच्ची ईंटें, पेड़ों की छालें, भोजपत्र जैसी सामग्री का उपयोग किया जाता था । ऐसी सामग्री पर किसी नुकीली वस्तु से लिखे जाने वाले विषय को उकेरा जाता । अनुभव एवं ज्ञान में जैसी–जैसी वृद्धि होती गई, वैसे–वैसे विविध पद्धतियों द्वारा लेखन का प्रारंभ हुआ। आस–पास में घटित घटनाओं, सरकारी दरबार में चलने वाले कामकाज का वृत्तांत आदि जानकारी लिखने की पद्धति प्रारंभ हुई । अनेक राजाओं ने अपने आदेशों, न्याय–निर्णयों और दानपत्रों को पत्थरों अथवा तांबे की पतरों पर उकेरकर रखा है । कालांतर में साहित्य की अनेक विधाओं का निर्माण हुआ । धार्मिक–सामाजिक ग्रंथों, नाटकों, काव्यों, यात्रा वर्णनों तथा वैज्ञानिक विषयों से संबंधित लेखन हुआ । ऐसी साहित्य सामग्री से तत्कालीन इतिहास को समझने में सहायता प्राप्त होती है । इस संपूर्ण साहित्य को इतिहास के 'लिखित साधन' कहते हैं ।

क्या तुम जानते हो ?

भोजवृक्ष की छाल से भोजपत्र बनाया जाता है । भोजवृक्ष कश्मीर में पाए जाते हैं ।

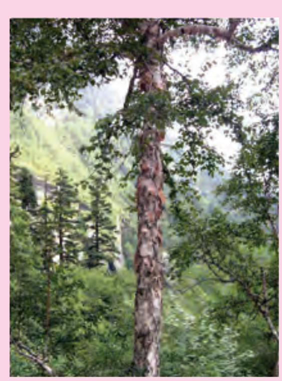

भोजवृक्ष

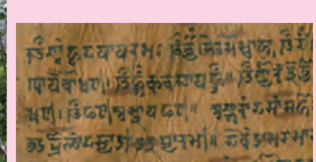

भोजपत्र

करके देखो ।

• अपने परिसर/गाँव के वस्तुसंग्रहालय में जाओ । वहाँ कौन-कौन-सी वस्तुएँ हैं; इसपर निबंध लिखो ।

• आटे की चक्की के गीतों का संग्रह करो ।

• विभिन्न लोकगीतों को प्राप्त करो । उनमें से कोई एक लोकगीत विद्यालय के सांस्कृतिक समारोह में प्रस्तुत करो ।

२.३ मौखिक साधन

ओवी (चक्की के गीत), लोकगीत और लोककथा जैसा साहित्य लिखकर रखा नहीं जाता । उसका रचयिता अज्ञात होता है । वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी द्‌वारा संरक्षित रखा जाता है । ऐसे साहित्य को मौखिक परंपरा द्‌वारा संरक्षित साहित्य कहते हैं । इस साहित्य में ओवियाँ, लोकगीत, लोककलाएँ जैसी लोकसाहित्य विधाओं का समावेश होता है । ऐसे साधनों को इतिहास के 'मौखिक साधन' कहते हैं ।

क्या तुम जानते हो ?

• **ओवी–** (चक्की का गीत)

पांडुरंग पिता । रुक्मिण माझी बया ।
आषाढ वारीयेला । पुंडलिक आला न्याया ।
(पांडुरंग पिता। रुक्मिण मेरी मैया ।
आषाढ़ के मेले में । ले जाने पुंडलिक आया।)

• **लोकगीत–**

महानगरी उजनी* *(उज्जयिनी)
लई पुण्यवान दानी
तेथे नांदत होता राजा
सुखी होती प्रजा
तिन्ही लोकी गाजावाजा
असा उजनीचा इक्राम* राजा ।*(विक्रमादित्य)
[महानगरी है यह उजनी
बड़ी पुण्यवान और दानी
राज्य करता था एक राजा
खुशहाल थी उसकी प्रजा
तीनों लोकों में था उसका नाम
उजनी का वह था राजा विक्रम]

क्या तुम जानते हो ?

प्राचीन भारत के इतिहास लेखन के साधन

भौतिक साधन

वस्तु	वास्तु
गुफाचित्र	गुफा
मिट्‌टी के बरतन	मकान
मिट्‌टी के शिल्प	स्तूप
मनके	गुफाएँ
रत्न, आभूषण	मंदिर
पत्थर के शिल्प	गिरजाघर (चर्च)
धातु की वस्तुएँ	मस्जिदें
सिक्के	स्तंभ
शस्त्र	

लिखित साधन

- हड़प्पा लिपि में लिखे लेख
- वैदिक साहित्य
- मेसोपोटेमिया का इष्टिका लेख
- महाभारत, रामायण ग्रंथों की पांडुलिपियाँ
- जैन, बौद्ध साहित्य
- ग्रीक इतिहासकार और यात्रियों का लेखन
- चीनी यात्रियों द्‌वारा लिखित यात्रा वर्णन
- व्याकरण ग्रंथ, पौराणिक ग्रंथ, उकेरे गए लेख

मौखिक साधन

प्राचीन भारत की मौखिक परंपरा द्‌वारा संरक्षित वैदिक, बौद्ध और जैन साहित्य अब लिखित स्वरूप में उपलब्ध हैं । यद्‌यपि इन साहित्यों का रूपांतर अब लिखित स्वरूप में हुआ है; फिर भी उनका पाठ करने की परंपरा अब भी जारी है । इतिहास के लेखन हेतु जब मौखिक साहित्य का उपयोग किया जाता है; तब उसका समावेश मौखिक साधनों में होता है ।

२.४ प्राचीन भारत के इतिहास के साधन

अश्मयुग से लेकर ई.स. की आठवीं शताब्दी तक का कालखंड भारतीय इतिहास का प्राचीन कालखंड माना जाता है । भारत के अश्मयुग की जानकारी पुरातत्वीय उत्खनन द्‌वारा प्राप्त होती है । उस कालखंड में लिपि का विकास नहीं हुआ था । ईसा पूर्व १५०० के पश्चात के प्राचीन इतिहास की जानकारी वैदिक साहित्य द्‌वारा प्राप्त होती है । आरंभ में वेद लिखित स्वरूप में नहीं थे । प्राचीन भारतीयों ने उन्हें कंठस्थ करने की तकनीक विकसित की । कालांतर में वेद लिखे गए । वैदिक साहित्य तथा उसके पश्चात लिखा गया साहित्य प्राचीन भारत के इतिहास के महत्वपूर्ण साधन हैं । इस साहित्य में ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद, आरण्यक, रामायण, महाभारत महाकाव्य, जैन एवं बौद्‌ध ग्रंथ, नाटक, काव्य, शिलालेख, स्तंभ लेख, विदेशी यात्रियों के यात्रावर्णन आदि का समावेश होता है । इसी भाँति पुरातत्वीय उत्खनन में पाई गईं वस्तुओं, पुरातन वास्तुओं, भवनों, सिक्कों जैसे भौतिक साधनों की सहायता से हम प्राचीन भारत के इतिहास को समझ सकते हैं ।

२.५ इतिहास लेखन के प्रति सावधानी

इतिहास के साधनों को उपयोग में लाते समय सावधानी बरतनी पड़ती है । कोई लिखित प्रमाण केवल पुरातन होने के कारण वह विश्वसनीय होगा ही; ऐसा नहीं होता है । वह किसका लिखा है, क्यों लिखा है, कब लिखा है, इसकी छानबीन करनी पड़ती है । विविध प्रामाणिक साधनों के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों की एक-दूसरे के साथ पड़ताल करनी पड़ती है । इतिहास लेखन में सूक्ष्म विश्लेषण पद्‌धति को बहुत महत्व प्राप्त है ।

क्या करोगे?

- यदि तुम्हें एक प्राचीन सिक्का मिल गया... तो...
  - अपने पास रखोगे ।
  - माता-पिता को दोगे ।
  - वस्तुसंग्रहालय में जमा करोगे ।

6PDS15

स्वाध्याय

१. **एक-एक वाक्य में उत्तर लिखो:**

(१) लिखने के लिए किस सामग्री का उपयोग किया जाता था?

(२) वैदिक साहित्य द्‌वारा कौन-सी जानकारी प्राप्त होती है ?

(३) मौखिक परंपरा द्‌वारा किस साहित्य को संरक्षित रखा गया है ?

२. **निम्न साधनों का वर्गीकरण भौतिक, लिखित और मौखिक साधनों में करो:**

ताम्रपट, लोककथाएँ, मिट्‌टी के बरतन, मनके, यात्रावर्णन, ओवियाँ (चक्की के गीत), शिलालेख, पोवाड़ा (शौर्यकाव्य), वैदिक साहित्य, स्तूप, सिक्के, भजन, पौराणिक ग्रंथ.

भौतिक साधन	लिखित साधन	मौखिक साधन
-----	-----	-----
-----	-----	-----
-----	-----	-----

३. **पाठ में दिए गए मिट्‌टी के बरतन के चित्र देखो और उनकी प्रतिकृतियाँ बनाओ ।**

४. **किसी भी सिक्के का निरीक्षण करो और उसके आधार पर निम्न मुद्दों का अंकन करो:**

सिक्के पर अंकित पाठ्‌यांश, उपयोग में लाई गई धातु, सिक्के पर अंकित वर्ष

....

सिक्के पर अंकित चिह्‌न, सिक्के पर अंकित चित्र, भाषा, भार,

....

आकार, मूल्य.

....

५. **मौखिक रूप मे कौन-कौन-सी बातें तुम्हें याद हैं ? उनको समूह में प्रस्तुत करो:**

जैसे: कविता, श्लोक, प्रार्थना, पहाड़े आदि ।

उपक्रम :

भौतिक और लिखित साधनों के चित्र इकट्‌ठे करो और उन चित्रों की प्रदर्शनी बाल आनंद मेला में लगाओ ।

* * *